अज्ञेय की काव्य भाषा

स्नातक भाग-3
हिन्दी (प्रतिष्ठा)
पंचम पत्र

अज्ञेय की भाषा भावानुरूपिणी है। अज्ञेय ने विषय के अनुरूप भाषायी स्तर पर भी प्रयोग किया है। उनकी कविता में शुद्ध साहित्यिक एवं परिनिष्ठित खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग हुआ है कहीं संस्कृत निष्ठ तत्सम शब्दावली है - यथा - अन्तर्मुखी, स्मृति, द्रष्टा, अनिर्वच आदि एवं कहीं सरल सुबोध्य तद्भव शब्दावली से युक्त हिन्दी यथा - लहू की धार, कुछी फीकी चांदनी, तुम्हारे नैन, मैं हूँ वह डगर आदि।

जब कभी रचनाकार के समक्ष संप्रेषणीयता का संकट उत्पन्न होता है, वह अपनी अनुभूति को सशक्त एवं सटीक ~~बनाने के~~ रूप में पाठकों तक पहुँचाने के लिए नए शब्दों की, भाषा की, प्रतीकों की, अलंकारों की, बिम्बों की निरंतर तलाश करता है। अज्ञेय प्रयोगधर्मी कवि हैं, अतः उनका शब्द, शिल्प एवं भाषा सजगता निश्चित रूप से कुछ अलग है।

अज्ञेय ने आवश्यकता अनुसार देशज शब्दों का भी प्रयोग किया है - यथा - छिमासी सब सहेली होगी, गहो हाथ पाहुन मनभाके, हरी बिछली घास, अँजुरी भर भर पी लो। आदि।

अज्ञेय की भाषा में तत्सम शब्दों की बहुलता दिखाई देती है। उनकी कविता में प्रचुरता से प्रयुक्त संस्कृत के कुछ शब्द इस प्रकार हैं - स्वर्णातीत, संचयित, स्वाच्छन्द, धारयित्री, दुर्निवार, अनाकृत, अपराजिता, परित्राण, उद्वेलित आदि।

कहीं-कहीं अज्ञेय पूर्णतः देशज, ग्राम्य एवं बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का प्रयोग भी करते हैं। यथा - छोरियाँ, लुनाई, फुदकी, कूट, कलस तिपुल, कनियाँ, खुदबुद, झनो, बिछली, नैन, अधूली, हलचल, थपेड़े आदि।

अज्ञेय की भाषा में उर्दू के शब्द भी उपलब्ध हो जाते हैं। यथा - इजहार, जोखिम, इजाजत

जादू, शायद, चाँद, वगैरह आदि।

अज्ञेय जी ने देशज क्रियापदों का प्रयोग कर एक ओर तो अभिव्यक्ति कौशल का परिचय दिया है दूसरी ओर इससे काव्य में लोक संस्पर्श एवं स्थानीय प्रभाव का समावेश भी हो गया है। यथा - बेध गई, कुमड़ती, कसमसाती, दिपता, आँकता, हुमसाता आदि। इन्होंने कहीं-कहीं नवीन क्रियापदों का भी निर्माण किया है - यथा - ठकलाता, बतियाना, उकेरता, आदि। अज्ञेय जी शब्दों के जादूगर हैं। उन्होंने नए-नए विशेषणों का प्रयोग करके भाषा को नूतन एवं प्रयोगशील बनाने का प्रयास भी किया है। यथा - दुःखी रेत, मुखर वासनाएँ, बुझी-फीकी चाँदनी आदि।

अज्ञेय जी की भाषा में लाक्षणिक पदावली का प्रयोग भी प्रचुरता से हुआ है।

यह लाक्षणिकता एक ओर तो लोकोक्तियों एवं मुहावरों के प्रयोग से आई है तो दूसरी ओर सांकेतिक अर्थ की अभिव्यक्ति होने से इसका समावेश हुआ है ऐसे कतिपय प्रयोग द्रष्टव्य हैं - धमनियों में उमड़ आई लहू की धार (वासना का ज्वार); यह प्रेम यज्ञ की ज्वाला है (आत्म बलिदान, पवित्रता); देखता इन प्रतीकों के कोंगरे हैं कूच (अर्थवत्ता का समापन); हरी उभी कचनार की कली (प्रसन्नता); सूने गलियारों की उदासी (निराशा) आदि।

कवि ने प्रतीकों, बिम्बों एवं अलंकारों का प्रयोग करते हुए अपनी भाषा को नई अर्थवत्ता प्रदान की है।

निचोड़ यह कि अज्ञेय अपने रचना शिल्प को निखारने के लिए भाषा में नए-नए प्रयोग करते हैं।